लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

वर्ष 03 अंक 03 लखनऊ। सोमवार 10 से 16 अक्टूबर-2016

e-mail-pawanprawah@gmail.com

मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16

रुद्राक्ष व तुलसी की माला में 108 मनिकाओं का वैज्ञानिक महत्व

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साईंसेज
लखनऊ के निदेशक हैं

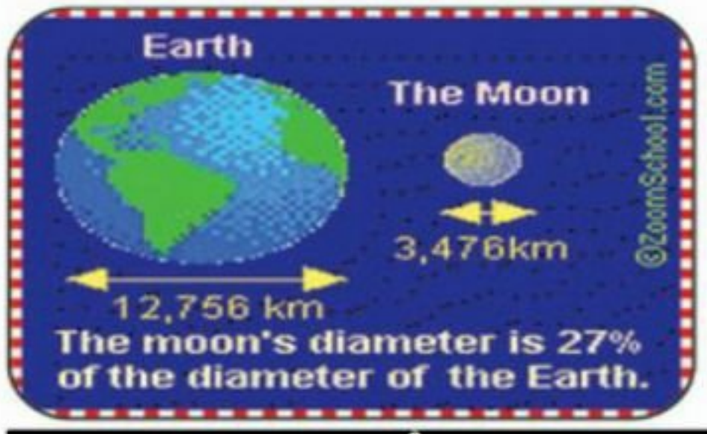

चन्द्रमा व पृथ्वी का व्यास

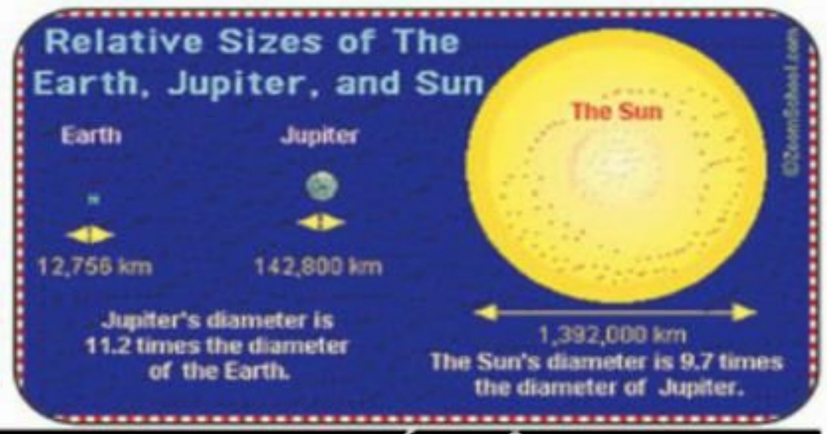

सूर्य व पृथ्वी का व्यास

पिछले अंक में हमने भगवान शिव को उर्जा अथवा शक्ति के आराध्यए भगवान ब्रह्मा को संसारिक जीवों की उत्पत्ति का और विष्णु को संसारिक क्रिया कलापों को चलाने का ध्योतक के रूप में जाना है तथा रुद्राक्ष व तुलसी की 108 मनिकाओं के महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त की थी। अब आईये 108 मनिकाओं के बारे में कुछ विशेष जानकारी हासिल करें।

108 मनिकाओं का वैज्ञानिक कारण व महत्व: जब हम रुद्राक्ष की 108 मनिकाओं का जाप मंत्रों के साथ करते हैं तो हमारा उद्देश्य परम शक्ति भगवान शिव से जुड़ने की होती है। तो क्या हम 108 बार मंत्रों की उच्चारण से असीम शक्तिवान हमारे इष्ट देव सूर्य, जो शिव है, उन पक्क पहुंच जोते है?

यही बात तुलसी की माला पर भी लागू होती है, जो 108 मनिकाओं की होती है, उसके 108 बार जाप से क्या हम चन्द्रमा तक पहुंच जाते हैं? जी हां, चौकिये नहीं यह बात बिल्कुल सत्य है।

अब आइये इस अध्ययन को कुछ विज्ञान व गणित के तराजू पर तौले और यह देखे कि हम कैसे सूर्य व चन्द्रमा तक अपने को पहुचाते हैं और उनकी शक्तियों का विशेष लाभ उठ्ते हैं। इन गणनाओं से 108 मनिकाओ के महत्व तथा उक्त तथ्यों की पुष्टि दर्शाती है-

1- रुद्राक्ष की 108 मनिकाओं की माला का ही जाप क्यों?

(अ). सूर्य का व्यास क्या है? यह है- 13,92,684 कि.मी.

(ब). यदि इसे 108 से गुणा करते हैं तो यह दूरी आती है। 15,04,09,872 कि.मी., (अर्थात 15 करोड़ 4 लाख 9 हजार 8 सौ बहत्तर कि.मी.)। उपरोक्त दूरी पृथ्वी से सूर्य की है, जो आज तक के रिकार्ड के हिसाब से 14,96,00,000 कि.मी. (14 करोड़ 96 लाख कि.मी.), के लगभग आकी गयी है।

रुद्राक्ष की 108 मनिकावाली माला

(स). इस प्रकार रुद्राक्ष की एक मनिका को सूर्य का व्यास मानते हुए, 108 बार मंत्रों

के जाप से सूर्य शक्ति का प्रवाह शरीर में प्राप्त होने लगता है।

2- तुलसी की 108 मनिकाओं की माला का ही जाप क्यों?

(अ). चन्द्रमा का व्यास क्या है? यह है- 3,474 कि.मी.

(ब). यदि इसे 108 से गुणा करते हैं तो यह दूरी आती है 3,75,192 कि.मी. (अर्थात 3 लाख 75 हजार 1 सौ बानवे)। उपरोक्त दूरी पृथ्वी से चन्द्रमा की है जो आज तक के रिकार्ड के हिसाब से 3, 70, 300 कि.मी. (3 लाख 70 हजार 3 सौ कि.मी.) के लगभग आकी गयी है।

तुलसी की 108 मनिकावाली माला

(स). इस प्रकार तुलसी की मनिका को चन्द्रमा (का व्यास) मानते हुए, 108 बार मंत्रों के जाप से चन्द्र शक्ति प्राप्त हो जाती है और सभी दुखों का विनाश हो जाता है।

उपरोक्त तथ्यों से आप अचम्भित अवश्य हो रहे होंगे, परन्तु यह भारत की वैदिक विज्ञान की एक अनोखी पहल है, जिससे शारीरिक शक्ति को बढ़ाने में मंत्रों का अद्भुत उपयोग आदिकाल से होता रहा है। इस प्रकार जहां एक तरफ रुद्राक्ष की 108 मनिकाओं की माला के जप से एक अनोखी ऊर्जा शक्ति पैदा कर अच्छे कार्य के साथ-साथ आयु में वृद्धि होती है, वही दूसरे तरफ तुलसी 108 मनिकाओं की माला के जप से चन्द्र शक्तिओं का लाभ उठ्ते हुए निरोग रहकर, लोगो को अच्छे कर्म से जोड़ कर संसारिक श्रृष्टि को चलाने का दायित्व का निर्वाहन होता है।

अब हम वैदिक समय के 108 अंको की महत्ता के कुछ अन्य तथ्यों को भी आप से सम्मुख रखना चाहूंगा:

(अ). ब्रह्माण्ड में ग्रहों की संख्या 9 है तथा प्रत्येक गृह पर 12 राशियों का प्रभाव पड़ता है, इस प्रकार कुल संख्या 108 आती है।

(ब). ब्रह्माण्ड में नक्छत्रों की संख्या 27 है तथा प्रत्येक नछत्रों के 4 चरण होते हैं, इस की भी कुल संख्या 108 आती है।

(स). आकाश गंगा में कुल मुख्य तारों कि संख्या 108 होती है।

(द). समुन्द्र मंथन के समय 54 देवता तथा 54 दानवों ने मंथन में भाग लिया था, इस प्रकार कुल संख्या 108 हुई।

इससे यह साबित होता है कि वैदिक काल में 108 संख्या का विशेष महत्व था। आइये भारत के गौरवशाली इतिहास को पुनर्जीवित करने हेतु 'वैदिक विज्ञान केन्द्र, लखनऊ' से जुड़कर वैदिक ज्ञान को लोगों में फैलाएं तथा इनकी सत्यता की परख को दुनिया के लोगों के सामने रखकर, भारत की पौराणिक वैदिक धरोहर को वसुधैव कुटुम्बकम् से जोड़कर जीवन की सार्थकता को समर्पण भाव से जनमानस के लिए उपयोगी बनाये।

●क्रमशः